पंडित दिनकर कैंकिणी कृत बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा, संगीत-विषय में पीएच.डी. की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की

रूपरेखा

शोधकर्त्री

दिव्यांशी सैनी

शोध-निर्देशक

डॉ0 गौतम तिवारी

संगीत-विभाग (गायन)

संगीत-विभाग, कला-संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा - 282005

2022

भूमिका - प्राचीन काल से ही संगीत प्रणालियों में भारतीय संगीत का प्रमुख स्थान रहा है। संगीत को एक उत्कृष्ट कला के रूप में जाना जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीन परंपरा में जहां हमें एक ओर अनेक पारंपरिक राग और बंदिशें प्राप्त होती हैं वहीं दूसरी ओर अनेक नवीन राग और बंदिशें भी इस परंपरा धारा में सम्मिलित होकर इसको निरंतर सुदृढ़ बनाती रही हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की इस दीर्घ यात्रा में ऐसे अनेक विद्वान कलाकार हुए हैं जिन्होंने नये रागों एवं बंदिशों की रचना करके संगीत जगत को विस्तृत किया है। ऐसे कलाकारों में पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, उस्ताद अल्लादिया खाँ, पं0 ओंकारनाथ ठाकुर, पं0 रातनंजनकर, पं0 बलवन्त राय भट्ट, पं0 कुमार गंधर्व, रामाश्रय झा अग्रणी माने जाते हैं। इसी क्रम में पंडित भातखण्डे की शिष्य परम्परा में एक नाम आता है पं0 दिनकर कैंकिणी का।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पंडित, संगीत गुरू एवं प्रसिद्ध संगीतकार पं0 दिनकर कैंकिणी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1927 को मुम्बई में हुआ। 07 वर्ष की उम्र से ही पंडित जी ने संगीत शिक्षण लेना प्रारम्भ किया। बाल्यावस्था से ही पंडित जी को संगीत के प्रति विशेष लगाव था। दिनकर जी की प्रारम्भिक शिक्षा पं० के. नागेश रॉव से हुई। बाद में पं0 ओंकारनाथ ठाकुर, पं० एस0 सी0 आर0 भट्ट तथा पं० एस0 एन0 रातनंजनकर से उन्होंने संगीत की उच्च शिक्षा ग्रहण की। दिनकर जी ने आगरा घराने की गायकी को आत्मसात कर लिया जिससे उनकी गायकी में नोम-तोम के आलाप आदि को विशेष रूप से देखा जा सकता है। इसके साथ ही पंडित जी की गायकी में ग्वालियर घराने की गायकी को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

पंडित जी अत्यधिक सरल व सहज विचारों वाले व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत की सेवा में अर्पण कर दिया। साथ ही संगीत जगत को एक नयी दिशा में ले जाने में अनेक-अनेक प्रकार से अपना योगदान प्रदान किया।

दिनकर जी ने 17 वर्षों तक संगीत निर्देशन के रूप में आकाशवाणी पर अपनी सेवा प्रदान की। पंडित जी द्वारा 700 से भी अधिक गीतों को संगीतबद्ध करने में अपना योगदान प्रदान किया।

दिनकर कैंकिणी उच्च कोटि के गायक होने के साथ ही अच्छे रचनाकार भी कहे जाते हैं। पंडित दिनकर जी ने प्रचलित (दरबारी कान्हड़ा, ललित, भैरव, पूर्वी, यमन आदि) तथा अप्रचलित (सावनी बिहाग, देस मल्हार, नट मल्हार, साजगिरी, हिंडोल बहार आदि) रागों में अनेक प्रकार की बंदिशों की रचनाकर उन्हें लिपिबद्ध करने का कार्य किया। इसके अतिरिक्त पंडित जी ने स्वनिर्मित रागों यथा- 'गुणरंजनी', 'गगन बिहंग', 'खेमध्वनि', 'भूपावली', 'बयाती', 'सालगभैरवी' में भी बंदिशों की रचना की।

दिनकर जी द्वारा अधिकतर बंदिशें 'दिनरंग' उपनाम से प्राप्त होती हैं। उनकी बंदिशों के संग्रह में तराना, ध्रुपद, ख्याल, भजन, झूला, होली, त्रिवट, टप्पा, पूरबी दादरा, भजन नुमा तराना, ठुमरी, बंदिश की ठुमरी आदि का समावेश है। उनकी रचनाएँ 'रागरंग' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हैं और सर्व सामान्य संगीत जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध हैं। पंडित जी के द्वारा रागों में रचित बंदिशें भाषा की दृष्टि से सरल, प्रकृति से सहज होने के साथ-साथ रागों के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से प्रदर्शित करने वाली है। व्यवहारिक दृष्टिकोण से दिनकर जी की बंदिशों का एक विशेष महत्व माना जा सकता है।

पंडित जी द्वारा प्राचीन रागों की परम्परा को पूर्ण महत्व देते हुए अनेक नवीन रागों की रचना का कार्य भी अध्ययन योग्य है। उदाहरण के लिए उनके द्वारा निर्मित राग 'खेमध्वनि' आगरा घराने के प्रसिद्ध राग खेम और कर्णाटक शैली के प्रसिद्ध राग हंसध्वनी से मिल कर रचा गया है। उनके द्वारा रचित राग विहंग में बिहाग अंग के रागों का सुंदर संयोग है। इन रागों में रचित बंदिशें भी विशेष अध्ययन योग्य हैं।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक होने के साथ साथ कर्नाटक संगीत पर अधिकार होने के फलस्वरूप पंडित जी ने एक बंदिश आदि ताल में कर्णाटक शैली के अनुरूप की है।

पंडित कैंकिणी ने पांच मात्रा के 'पञ्चरूपक' ताल की भी रचना की है।

दिनकर जी द्वारा अनेक रागों में बंदिश की रचना करके एवं स्वनिर्मित नवीन रागों व तालों के माध्यम से संगीत के सौंदर्य पक्ष को और अधिक सुसज्जित करने में अपना योगदान प्रदान किया है, प्रत्येक संगीतज्ञ का अपना एक स्वतंत्र संगीत व्यक्तित्व होता है| अपनी एक स्वतंत्र संगीत प्रकृति होती है, जिसके आधार पर वह

अपना संगीत व्यवहार करता है। संगीत का प्रस्तुतीकरण, संगीत संबंधी रचनाओं का निर्माण, संगीत शिक्षण आदि सभी उसके सांगीतिक व्यक्तित्व को प्रदर्शित करते हैं। उसकी समस्त संगीत रचनाओं में विशेषकर बंदिशों के निर्माण में, रागों के प्रयोग में, रागों की विशिष्ट स्वरावलियों के प्रयोग में, स्वरों का प्राधान्य तथा ताल संबंधी प्रयोग विलक्षण होता है। इन बिन्दुओं का अध्ययन हमे रागों एवं तालों के सूक्ष्म अध्ययन की दिशा प्रदान करता है और संगीत संबंधी अध्ययन के नये आयाम प्रदर्शित करता है। शोधकर्त्री को पंडित दिनकर कैंकिणी द्वारा रचित बंदिशों के प्रति विशेष आकर्षण है। इन बंदिशों को बंदिश के प्रकार, बंदिश की भाषा, ताल प्रयोग, ताल सौंदर्य, विशिष्ट स्वरावली प्रयोग, रस-भाव, विशिष्ट साहित्य आदि बिन्दुओं के आधार पर अध्ययन किया जाये तो संगीत जगत को अवश्य ही लाभ होगा इस संभावना से प्रेरित होकर ही शोधकर्त्री ने निम्न विषय का चयन किया है।

विषय कथन - पंडित दिनकर कैंकिणी कृत बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण - जब कोई शोधकर्ता शोधकार्य करने के लिए किसी विषय का चयन करता है तो उसके सामने कई प्रश्न आते है जिनके उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता अपने विषय से सम्बन्धित सामग्री जैसे- शोध ग्रंथ, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकओं, अभिलेखों का अध्ययन कर प्रश्नों के उत्तर पाता है, साथ ही यह देखता है शोधकर्ता द्वारा चयनित विषय पर पूर्व से कितना काम हो चुका है तथा किस विधि का प्रयोग किया गया तथा क्या निष्कर्ष निकला। पूर्व में किये गये यह शोधकार्य कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हुए तथा अब आगे किस विषय पर शोध कार्य हो सकता है। इसी समस्या के निदान के लिए शोधकत्री द्वारा अपने शोध से सम्बन्धित कार्य का सर्वेक्षण किया गया, जो निम्नवत है -

शोध-प्रबन्ध -

1. **रात्रिगेय पांच रागांग रागों की बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन – चारू रानी २०१९, दयालबाग यूनिवर्सिटी आगरा।**

इस शोध के अंतर्गत शोधकर्त्री द्वारा भारतीय संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास तथा राग वर्गीकरण व्यवस्था को बताया गया है साथ ही चयनित पांच रागांग रागों (बिहाग, कल्याण, मियां मल्हार, मालकौंस, दरबारी कान्हड़ा) का विवरण, बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन आदि के विषय में बताया है। रागों में बंदिश की भूमिका व महत्व, साहित्य तथा रस-भाव के अनुसार बंदिशों की भूमिका, उपशास्त्रीय संगीत की बंदिशों में शब्दों का महत्व आदि विषय के बारे में अध्ययन किया गया है।

2. **पंडित भीष्मदेव चट्टोपाध्याय के सांगीतिक व्यक्तित्व एवं विश्लेष्णात्मक अध्ययन- शिखा मुखर्जी २००१, दयालबाग यूनिवर्सिटी आगरा।**

   शोधकर्त्री ने इस शोध के अंतर्गत भीष्मदेव जी का प्रारंभिक जीवन, शिक्षा-दीक्षा एवं सांगीतिक यात्रा के विषय में बताया है साथ ही शास्त्रीय गायक, वादक, संगीत निर्देशक के रूप में वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त भीष्मदेव जी की गायन शैली व उनके द्वारा गायी जाने वाली बंदिशों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है तथा बंदिशों को भातखंडे लिपि पद्धिति में लिपिकरण करने का कार्य किया है।

3. **प्रदीप कुमार दीक्षित 'नेहरंग' का सांगीतिक योगदान- अनिल कुमार २०२२, इंद्रा कला संगीत विश्विद्यालय।**

   प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोधकर्त्री ने प्रदीप दीक्षित जी के जन्म, बाल्यावस्था व शिक्षा संबंधी बातों पर प्रकाश डाला है साथ ही संगीत के क्षेत्र में किये गए कार्यों को बताया गया है तथा राग के प्रस्तुतीकरण की भी चर्चा की गयी है। दीक्षित जी द्वारा शास्त्र पक्ष का अध्ययन किया गया है व उनकी गायकी में विशेष रूप से बहलावा, आलाप, तानालाप आदि का प्रयोग देखा गया है। इसके अतिरिक्त संगीत क्षेत्र में अनेक प्रकार की पुस्तकों - सरस-संगीत, जीवन-कवन सुमन आदि का सृजन किया एवं संगीत क्षेत्र में मिलने वाले पुरस्कारों के विषय में बताया गया है।

4. **संत गरीब दास एवं दादू दयाल की रचनाओं का सांगीतिक दृष्टि से विवेचनात्मक अध्ययन- मंजीत २०१५, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी।**

शोधकर्त्री द्वारा इस शोध अध्ययन के अंतर्गत संत गरीब दास जी के प्रारंभिक जीवन व शिष्य परम्परा के बारे में बताया एवं भक्ति व संगीत के सम्बन्ध को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक राग आदि में निहित ताल, वाद्य (सुषिर, घन, तत, अवनद्ध), नृत्य संबंधी पद – रास, फाग, मुजरा आदि पर चर्चा की है। साथ ही शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गेय विधाओं व लोक गीत प्रकारों का वर्णन तथा उनका महत्व विस्तारपूर्वक बताया है।

5. **पंडित रामाश्रय झा 'रामरंग' व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं का सांगीतिक विश्लेषण – मनीषा दीक्षित २०१४, वनस्थली यूनिवर्सिटी राजस्थान।**

   इस शोध के अंतर्गत पंडित रामाश्रय झा जी की शिक्षा व जीवन के विषय में बताया गया है साथ ही अनेक परंपरागत रागों में बंदिश निर्माण व नवीन रागों की रचना आदि में किस प्रकार विविधता पायी जाती है इसका अध्ययन किया गया है।

6. **1997-98, श्रीमती नीरा ग्रोवर (मदन), उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में कुछेक प्रमुख आधुनिक वाग्गेयकारों का सांगीतिक योगदान, एस0 एन0 डी0 टी0 महिला विश्वविद्यालय, मुंबई - 400020**

   इस शोध के अन्तर्गत चतुर्थ अध्याय में भातखण्डे परम्परा के वाग्गेयकार के रूप में श्री पं0 दिनकर कैंकिणी जी के बारे में बताया गया है।

पत्र एवं पत्रिकायें -

1. **दिनकर कैंकिणी, आए संत सुजान देत विद्या को दान, संगीत कला बिहार, दिसम्बर 2004, वर्ष 57, अंक 12, पे0-17**

   इस लेख के अन्तर्गत पंडित दिनकर कैंकिणी जी द्वारा रातनजंनकर जी से हुई बातचीत के बारे में बताया गया, साथ ही अण्णा साहब को याद करते हुए दिनकर जी ने नवीन बंदिश का निर्माण किया।

2. **राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित, दिसम्वर 1997, पे0-50**

इसके अन्तर्गत दिनकर जी के व्यक्तित्व के बारे में बताते हुए उनको संगीत के क्षेत्र में मिले पुरस्कार के बारे में बताया गया है।

उपर्युक्त साहित्य के सर्वेक्षण के पश्चात् शोधकर्त्री को ज्ञात हुआ कि कैंकिणी जी द्वारा रचित बंदिशों पर पूर्व में कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। अतः सम्बन्धित शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्री ने पं0 दिनकर कैंकिणी कृत बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन करने हेतु विषय का चयन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य -

- पंडित दिनकर कैंकिणी जी के सांगीतिक व्यक्तित्व का अध्ययन।
- पंडित दिनकर कैंकिणी जी का संगीत क्षेत्र में सांगीतिक योगदान का अध्ययन।
- पंडित दिनकर कैंकिणी जी द्वारा बंदिश रचना की विशेषताओं का अध्ययन।
- पंडित दिनकर कैंकिणी जी द्वारा रचित बंदिशों के सांगीतिक सौंदर्य का अध्ययन।
- कलाकार के व्यक्तित्व का राग के सूक्ष्म रूप पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

विषय परिसीमांकन - समय सीमा को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्री द्वारा पंडित दिनकर कैंकिणी कृत कल्याण थाट, विलाबल थाट के रागों व नवनिर्मित रागों का चयन किया है। दोनों ही थाटों में ७-७ रागों में बदिशों की रचना की गई है :-

कल्याण थाट- १. राग यमन, २. राग भूपाली, ३. राग गौड़ सारंग, ४. राग केदार, ५. राग हिंडोल, ६. राग श्याम कल्याण, ७. राग मारू बिहाग

बिलावल थाट- १. राग शुद्ध बिलावल, २. राग अल्हैया बिलावल, ३. राग बिहाग, ४. राग सावनी बिहाग, ५. राग हेमंत, ६. राग दीपक, ७. राग कलावती

नवनिर्मित राग- १. राग खेमध्वनि, २. राग गगनबिहंग ३. राग भूपावाली, ४. राग गुणरंजनी, ५. राग सालगभैरवी, ६. राग बयाती

शोध के स्रोत - विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन, संग्रहालय, पुस्तकालयों, दृश्य-श्रृव्य सामग्री, इंटरनेट, संगीत जगत के श्रेष्ठ कलाकारों व विद्वानों से विचार-विमर्श कर एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा।

शोध औचित्य - पंडित जी की बंदिशों के अध्ययन से रागों की विस्तृत जानकारी तो प्राप्त होगी ही, साथ ही बंदिशों से जुड़े विभिन्न पक्षों जैसे- विशिष्ट स्वरावलि प्रयोग, ताल प्रयोग व ताल सौंदर्य, भाषा और साहित्य प्रयोग, रस-भाव आदि के अध्ययन से बंदिशों के सौन्दर्यात्मक पक्ष को उजागर किया जा सकता है। बंदिशों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि पंडित दिनकर कैंकिणी जी द्वारा रचित बंदिशें अन्य कलाकारों द्वारा रचित बंदिशों से किस प्रकार भिन्न हैं। ऐसे अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है की स्थूल रूप से राग स्वरुप सामान होते हुए भी घरानों, परम्पराओं, शिक्षण और व्यक्तिगत विचारों से इनका सूक्ष्म रूप भिन्न हो जाता है। यह अध्ययन भारतीय शास्त्रीय संगीत और मुख्य रूप से राग संगीत के विस्तृत अध्ययन के सहायक रूप में और बंदिश निर्माण से सम्बंधित अनेक पक्षों को सुदृढ़ करने में सहायक होगा ऐसी शोधार्थी की संभावना है। पं० दिनकर जी की बंदिशों पर किसी भी प्रकार का कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर पंडित कैंकिणी कृत बंदिशों के विस्तृत अध्ययन हेतु शोधार्थी ने शोध के इस विषय को चयनित किया है।

अध्यायों का विभाजन - समस्त विषय सामग्री से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन निम्न अध्यायों के अन्तर्गत किया जायेगा -

- **प्रथम अध्याय** - पं0 दिनकर कैंकिणी - एक परिचय
- **द्वितीय अध्याय –** पं0 दिनकर कैंकिणी का सांगीतिक योगदान
- **तृतीय अध्याय** - रागों में बंदिश का महत्व
- **चतुर्थ अध्याय** - पं0 दिनकर कैंकिणी कृत बंदिशों का अध्ययन

- भाग-1 (कल्याण थाट जन्य राग)
- भाग-2 (विलाबल थाट जन्य राग)

- भाग-3 (नवनिर्मित राग)

➢ **पंचम अध्याय** – पं० दिनकर कैंकिणी कृत बंदिशों में सौन्दर्यात्मक तत्व

➢ निष्कर्ष।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

- गर्ग, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, भारत के संगीतकार, संगीत कार्यालय हाथरस, प्रथम संस्करण-2013
- गोस्वामी, डॉ0 हरीकिशन, भारत संगीत की परम्परा : वंशानुक्रम एवं वातावरण, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली 110002।
- कुमार, डॉ0 नरेश, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली 110002, संस्करण-2013।
- कैंकिणी पं0 दिनकर 'दिनरंग', राग रंग, प्रकाशक - वितरक, प्रसाद कुलकर्णी, संस्कार प्रकाशन 6/400, अभ्युदयनगर, कालाचौकी, मुंबई-400033, द्वितीयवृत्ती 21 फरवरी 2020।
- मिश्रा, कान्ता प्रसाद, स्वर विज्ञान एवं गणित, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली -110002, संस्करण-2009।

शोध प्रबन्ध :

- रानी, चारू, रात्रिगेय पांच रागांग रागों की बंदिशों का सांगीतिक अध्ययन, दयालबाग यूनिवर्सिटी आगरा, २०१९।
- तिवारी, डॉ0 गौतम, पं0 श्री कृष्ण नारायण रातनंजनकर जी का संगीत के क्षेत्र में योगदन का विश्लेषणात्मक अध्ययन, दयालबाग़ शिक्षण संस्थान आगरा, 2014।

बेबसाइट :

- https://www.sahapedia.org/dinkar-kaikini-remembered
- https://www.youtube.com/watch?v=7twn21zBdeg

- https://www.youtube.com/watch?v=NM71KXUrhy0
- https://www.youtube.com/watch?v=MCdSwAyo7bI